International Journal of Applied Research 2018; 4(2): 249-250

**ISSN Print:** 2394-7500
**ISSN Online:** 2394-5869
**Impact Factor:** 8.4
IJAR 2018; 4(2): 249-250
www.allresearchjournal.com
Received: 22-11-2017
Accepted: 26-01-2018

**Amit Raj**
Research Scholar, Magadh University, Department of Pali Language, Bihar, India

**Corresponding Author:**
**Amit Raj**
Research Scholar, Magadh University, Department of Pali Language, Bihar, India

# मंकुल पर्वत पर भगवान बुद्ध का छठा वर्षावास

## Amit Raj

**प्रस्तावना:**

बुद्धवंश अष्टकथा के अनुसार बुद्ध का छठा वर्षावास (522ई0पू0) मंकुल पर्वत पर हुआ था। यह मंकुल पर्वत बिहार प्रान्त के गया जिलान्तर्गत अतरी अंचल के राजस्व ग्राम–जाजपरसा के उत्तरी भाग में स्थित पर्वत ही है। वर्तमान राजगृह से सड़क मार्ग (वनगंगा होते हुए) से 20 किलोमीटर पश्चिम तथा बुद्धकालीन सृष्टिवन (वर्तमान जेठियन) से 4 किलोमीटर उत्तर में अवस्थित है। मगध के पहाड़ी श्रृंखलाओं में यह सबसे उँची पर्वत श्रृंखला है। मंकुल पर्वत राजगृह से वैभार पर्वत श्रृंखला से लगभग 10 किलोमीटर पश्चिम में अवस्थित है।1

यह उल्लेखनीय है कि मगध में जहाँ भी बुद्ध वर्षावास करते थे उन–उन स्थानो पर बुद्ध और भिक्षु संघ के ठहरने की व्यवस्था स्वंय मगध राज बिम्बिसार करते थे। मंकुल पर्वत शिखर से 100 फीट नीचे दक्षिण भाग एक जलकुंड (चि संख्या–01) पत्थर काटकर निर्माण करवाया था, जिसका मुँह गोलाकार है। यह जलकुंड 17 फीट लम्बा, 12 फीट चौड़ा और 8 फीट गहरा है। जलकुंड का द्वार 4) फीट, 5 फीट गोलाकर है। उस जलकुंड में वर्षा का पानी एकत्रित होकर सालोभर जमा रहता है।

बुद्ध गुफा– उपरी शिखर से लगभग 250 फीट उत्तरी पश्चिमी भाग में पत्थर काटकर बुद्ध के आवास के लिए एक गुफा का निर्माण करवाया था, जो लगभग 10 फीट लम्बा 6 फीट चौड़ा तथा 8 फीट ऊँचा है। इस गुफा से लगभग 15 फीट उपर दक्षिण भाग में पत्थर काटर टव (चित्र संख्या–03) वनवाया था, जिसमें संग्रहित पानी का उपयोग स्वंय बुद्ध करते थे। वर्षा के अन्तराल में ही बुद्ध आस–पास के एक हजार लोगों की दीक्षा भी दिए थे। यह दीक्षा चबूतरा आज भी वर्तमान है। जो 200 फीट लम्बा (उत्तर से दक्षिण) और 100 फीट चौड़ा (पूरब से पश्चिम) है। इस दीक्षा चबूतरा स्थल के दक्षिण पश्चिम कोने पर सम्भवतः सम्राट अशोक द्वारा एक स्तूप का निर्माण करवाया गया था, जिनके अवशेष आज भी उपलब्ध है। साथ ही मंकुल पर्वत के उपर शिखर पर सम्राट अशोक ने एक स्तूप का निर्माण भी करवाया था जिसकी ईट से बनी दीवारे आज भी है।

मंकुल पर्वत पर चढ़ने के लिए मगध राज बिम्बिसार दो मार्गो का निर्माण करवाया था। पूर्वी मार्ग चकरा दरगाह से चोरघाटा तक जाने केलिए रथ मार्ग बनवाया था, जो आज भी है। चोरघाटा मे रथ का पड़ाव रहता था, तथा यहाँ से स्वंय मगध राज बिम्बिसार लगभग 500 फीट की चढ़ाई पैदल तय करता था। मंकुल पर्वत के पश्चिमी भाग से लोग पैदल आया जाया करते थे। भूतल से मंकुल पर्वत की दूरी लगभग 3275 फीट है।

मध्यकाल में यह मंकुल पर्वत बीबी जंगलों2 के नाम से विख्यात था। चूँकि इस स्थल पर एक मुस्लिम महाराजी (सन्यासिनी) सावन के महीनो के शनिवार के दिन जलकुंड में स्नान कर इसी जलकुंड के पानी से खिचड़ी बनाकर खाती थी। खिचड़ी बनाकर खाने का उद्देश्य यह था कि उसका पुर्नजन्म कुकुतर (कुत्ता) जाति मे न हो। उस समय से ही बुद्ध काल का मंकुल पर्वत बीबी जंगलो के नाम से विख्यात हो गया।

लेकिन बीसवीं शताब्दी के पाचवें दशक से यह मुनि आश्रम के नाम से विख्यात हुआ। चूँकि 1960–62 में लालबाबा नामक साधु जाजपरसा गाँववालों के सहयोग से मंकुल पर्वत की चोटी पर (जहाँ एक बौद्ध स्तूप था) चबुतरा का निर्माण करवाकर भाद्र महीना के कृष्णपक्ष जन्माष्टमी को झंडा गड़वाकर बारह घंटे का अखंड हरिकर्तन का आयोजन प्रारंभ हुआ जो लगभग पचीस वर्षो तक चला। लालबाग की मृय के पश्चात अखड हरिकीर्त्तन का आयोजन बन्द हो गया। इसका एक कारण यह भी था कि चबूतरा पर वज्रपात हुआ और चबूतरा नष्ट हो गया। उसी समय से जाज परसा के लोग मुनि आरम पर अखंड हरिर्कीतन भी परम्परा को बन्द कर दिए।

मंकुल पर्वत के जलकुंउ के जल की विशेषताएं :–

1. इस कुण्ड के जल से स्नान करने पर चर्मरोग की बीमारी दूर होती है।
2. इस कुण्ड के पानी से बहुत सवादि खीचड़ी बनती है।

3. इस कुण्ड के पानी हमेशा कीटाणुरहित रहता है।

मंकुल पर्वत के उत्तरी और दक्षिणी भाग में बसे सैकड़ो गाँवों के लोग सावन महीने में श्रावणी सैर के लिए जाते है और जलकुण्ड में स्नान कर खिचड़ी बनाकर खाते है। तत्पश्चात् गाना बजाना कर शाम में अपने–अपने गाँव लौट जाते है।

प्राचीन पालि परम्परा के अनुसार महात्मा बुद्ध मगध में सात3 वर्षावास व्यतीत किए थे जबकि मध्यकालीन बौद्ध इतिहास4 के अनुसार मगध में आठ वर्षावास व्यतीत किए थे। डॉ० थामस के अनुसार मध के छः वष्रवास स्थल5 निम्न है :–

1. दूसरा वर्षावास राजगृह में शीतवन में
2. राजगृह के दक्षिण वर्तमान हड़िया गाँव के उत्तरी पहाड़ी तलहटी में
3. राजगृह के वेणुवन में दो वर्षावास
4. मंकुल पर्वत पर जो यष्टिवन से 4 किलोमीटर उत्तर आधुनिक ग्राम जाजपरसा के पहाड़ के उपरी शिखर पर
5. हसुआ के एकनार गाँव में (एक नाला ग्राम कक्षा)
6. यष्टिवन से दो किलोमीटर पूरब लसुरगुहा में।

मध्यकाल के बौद्ध इतिहास के अनुसार दो वर्षावास वैशाली में महात्मा बुद्ध व्यतीत किए थे। चूँकि मगधराज बिम्बिसार के द्वारा वैशाली को मगध के अधीन कर लिया गया था।

मंकुल पर्वत की स्थिति के संबंध में पालि परम्परा भगवान बुद्ध का पाँच वर्षावास राजगृह में बतलाया गया है। आधुनिक बौद्ध विद्वानो ने मंकुल पर्वत की स्थिति के संबंध में मतभिन्नता देखी जाती है। डॉ० मलालशेखर7 ने मंकुल पर्वत को गुजरात के सुनवरान्त के मंकुराकाराम को बताया है जिसे बौद्ध विद्वानो से उसे नही माना है। चूँकि उस समय उस भूभाग में धर्म का प्रचार भी नही हुआ था। डॉ० बी० सी० ला० 9 ने बोधगया से 26 मील दक्षिण और हजारीबाग जिले के चतरा से 16 मील उत्तर कलुआ पहाड़ को बतलाया है। जहाँ महात्मा बुद्ध छठा वर्षावास व्यतीत किए थे। महापंडित राहुल सांस्कृत्ययन 10 ने दृढतापूर्वक कहा है कि मंकुल पर्वत बिहार का कोई पर्वत है।

## संदर्भ सूची :


1. बुद्धवंस अट्टकथा पृ०–6
2. द एकटक्वेरियन रिमतेन्स इन बिहार पृ० 189 लेखक डी० आर० पाटिल, के० पी० जायसवाल संस्थान पटना।
3. द लाफ आफ बुद्ध पृ० 107 लेखक डॉ० ई० जे० थामस
4. द लाइफ आफ बुद्ध पृ०–86 लेखक डब्ल्यू डब्ल्यू राकहिल
5. द लाइफ बुद्ध लेखक डब्ल्यू डब्ल्यू राकहिस
6. एनिशएन्ट ज्याग्रफी आफ इंडिया पृ० 389, ए० कनिघम
7. डिक्शनरी आफ पालि प्रोपर नेम्स पृ०407 प्रो० जी मललशेखर
8. उत्तर प्रदेश बौद्ध धर्म के विकास का इतिहास पृ० 75 डॉ० नलिनाक्ष दत्त और कष्ण दत्त वाजपेयी
9. हिस्ओरिकल ज्याग्रफी आफ एन्शिएन्ट इंउिया पृ० 235 प्रो० बी०सी०ला०
10. महामानव बुद्ध – महापंडित राहुल सांस्कृत्यायन।